Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2020

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्राईवेट ट्यूशन करने के कारणों का अध्ययन (STUDY OF REASONS FOR PRIVATE TUITION OF UPPER SECONDARY LEVEL STUDENTS)

MR. SURESH PATLE [1] | MR. JHAMENDRA KUMAR HARINKHERE [2] | MR. MURLIDHAR KATRE [3]
[1,2,3] ASSISTANT PROFESSOR, DEPARTMENT OF EDUCATION, SARDAR PATEL UNIVARSITY,BALAGHAT(M.P.)

ABSTRACT:

KEYWORDS:

प्रस्तावना

शिक्षा का तात्पर्य है, संकुचितता को त्याग कर संवेदनशीलता के क्रम में प्राणीमात्र के प्रति दयाभाव रखते हुए भारतीयता के सांस्कृतिक, आर्थिक, नैतिक व आध्यात्मिक उपागमों को आत्मसात करना। आज शिक्षा का विद्यालयीकरण हो गया है, जिसमें निश्चित अवधि में निश्चित पाठ्यक्रम को निश्चित समय विभाग वक्र के माध्यम से निश्चित विषय अध्यापकों द्वारा निश्चित कालांशों में पढ़ाना समाहित है। विद्यालय प्रणाली की जटिलता ने इसे जन्म दिया है, गृहकार्य की अपरिहार्यता को जो इस प्रणाली की सफलता का एकमात्र साधन बनकर रह गया है। यशपाल समिति ने शिक्षा के जिस बोझिलेपन से शिक्षा को मुक्त करने की अनुशंसा की थी तथा जिसे उन्होंने अजीर्णी शिक्षा (ओवर ऐज्युकेशन) का नाम दिया था, आज वही शिक्षा औपचारिक पढ़ने–लिखने व गणना करने के संकीर्ण अर्थों में विद्यालयों में क्रियान्वित की जा रही है। विद्यार्थी पर इसके फलस्वरूप प्रारम्भ से ही बस्तों का बोझ इतना पड़ जाता है कि वह अपनी आयु संरचना की तुलना में शैक्षिक पाठ्यक्रम को अपनी पहुंच से बाहर समझने लगता है। ऐसी स्थिति में अभिभावकों को अपने बच्चे को अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण करवाने की मानसिकता ट्यूशन प्रवृत्ति का पनपाने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर रही थी, तब ट्यूशन का प्रारम्भिक काल रहा होगा। मेधावी छात्र अधिक ज्ञानार्जन हेतु और कमजोर छात्र औसत ज्ञानार्जन हेतु कभी योग्य शिक्षक से अतिरिक्त समय में शिक्षा पाते थे जिसके लिए शिक्षक सीमित अर्थ प्राप्ति के साथ अपना अतिरिक्त समय देकर छात्रों को उनके वांछित स्तर तक लाने का प्रयास करते थे। इस व्यवस्था में दो बाते प्रमुख थी।

एक शिक्षक का अर्थ लोलुप न होना और दूसरा इस कार्य का उसके शालीय शैक्षणिक कार्य पर तनिक भी अन्तर न पड़ना।

पिछले तीन–चार दशकों में लगभग सभी क्षत्रों में आशातीत परिवर्तन हुए है। आजादी के समय से देश की जनसंख्या लगभग तिगुनी हो गयी है। उपरोक्त विशाल फलक के फलस्वरुप बढ़ती गई प्रतिस्पर्धा, स्वार्थपरता, नैतिक मूल्यों की तिलांजलि एवं कोई भी साधन अपनाते हुए वांछित प्राप्ति हेतु शिक्षक नैतिक मूल्यों से अनभिज्ञ होकर हर सम्भव प्रकार से अर्थोपार्जन कर समाज में सुख–सुविधाओं को जुटा शानदार जीवन जीने की होड़ में अपनी–अपनी दुकानें चलाने लगे।

दूसरी ओर शैक्षिक योग्यता की एक जाँच को अपर्याप्त मान विशिष्ट शैक्षिक धाराओं के लिए एवं नौकरियों के लिए प्रतियोगिता और अधिक कठिन, तीव्र व सघन हो गई। अतः अभिभावकों का अपने बच्चों के लिए ट्यूशन की ओर आकर्षण अधिक बढ़ गया। निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ने परिपत्र जारी कर शिक्षण संस्थाओं के अध्यापकों के वैयक्तिक अध्ययन ''ट्यूशन'' को नियंत्रित करने के लिए सन् 1987–1990 में आदेश प्रसारित किये थे, परन्तु इन आदेशों की अनुपालना न होने के संबंध में विभाग को अनेक शिकायतें प्राप्त हो रही थी कि, अध्यापक अपने निश्चित कालांशों में निष्ठा से अध्यापन कार्य नहीं करवाते और छात्रों पर प्राइवेट ट्यूशन करने हेतु दबाव डालते है। अतः नवीन सत्र 1995–96 के प्रारम्भ से ही पुनः निर्देश प्रदान किये गये। यहां तक कि राजस्थान सरकार ने शिक्षा विभाग के नेतृत्व में राज्य के 6 वृत्तों में ट्यूशन करने वाले अध्यापकों को पकड़ने के लिए उड़नदस्ते गठित किये है।

संबंधित साहित्य का महत्व

किसी भी प्रकार के अनुसंधान को वैज्ञानिक ढंग से सही बनाने में संबंधित साहित्य एवं विषय सामग्री का अध्ययन महत्वपूर्ण है इससे शोधकर्ता को व्यवस्थित योजना बनाने, कार्यान्वित करने, विधियों, प्रविधियों एवं उपकरणों के चुनाव में सरलता रहती है। जैसा कि गुड महोदय ने कहा है–

- इसके अध्ययन से समस्या से संबंधित विचारों एवं सिद्धान्तों एवं परिकल्पनाओं का स्पष्टीकरण होता है।
- संबंधित साहित्य के अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को यह विश्वास हो जाता है कि इस क्षेत्र में यह कार्य उपयोगी है या नहीं।
- इस प्रकार पुनरावृत्ति की शंका का समाधान भी हो जाता है।
- समस्या के अनुसार ही शोध प्रणाली प्रस्तावित करना।
- समस्या के परिणामों को प्रस्तुत करने में इस अध्ययन से तुलनात्मक समंक प्राप्त हो सकते है।
- शोधकर्ता को सामान्य निर्देशन प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, लेखों तथा प्रतिवेदनों आदि में उपलब्ध होने वाले पूर्ववर्ती अथवा इससे सम्बन्ध रखने वाले अध्ययनों का एक संक्षिप्त विश्लेषण करना आवश्यक प्रतीत होता है। यह कार्य इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत कर देता है। शोधकर्ता उससे संबंधित उपलब्ध ज्ञान राशि से सुपरिचित है और इस अध्ययन से समय व श्रम के अध्ययन में कमी की जा सकती है। अतः प्रत्येक शोधकर्ता का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने शोध संबंधी समस्या का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उससे संबंधित साहित्य का अध्ययन करे। शोधकर्ता ने इसी उद्देश्य से संबंधित साहित्य का अध्ययन किया।

संबंधित साहित्य के महत्व के बारे में गुड, बार तथा स्केट्स ने लिखा–

''एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में काम करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।''

बर्ग महोदय के अनुसार – ''संबंधित साहित्य का अध्ययन किसी अनुसंधानकर्ता को इस तरह बना देता है कि पहले हुए शोध कार्य को ढूंढा जा सके तथा उसका अध्ययन कर सके। अनुसंधानकर्ता ने अपने शोध की विधि, उपकरणों आदि का चयन करने के संबंधित साहित्य से सहायता मिलती है।''

जे.एफ. रमल के अनुसार – ''नियमानुसार कोई भी शोध कार्य उस समय तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता जब तक कि उससे संबंधित साहित्य का लिखित रुप अध्ययन में नहीं दिया गया हो।''

कोई भी अध्ययन क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर भावी शोध आश्रित होता है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य ''तीर'' के समान है। इसके अलावा इसके अभाव में सही दिशा में वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। संबंधित साहित्य के अध्ययन से समस्या के पहलुओं की जानकारी होती है।

कार्टर वी. गुड के अनुसार – ''संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण समस्या के उचित नियमों को क्रियान्वयन, समस्या के सही सम्प्रत्यय तथा उसके सभी हल को समझाने में सहायक है। यह परिकल्पना के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है, अन्वेषण विधि सुझाता है एवं विवेचन हेतु तुलनात्मक सूचनाएं प्रदान करता है।''

फोक्स डी.जे. का कथन है – संबंधित साहित्य के अध्ययन के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए बताया भी है – ''समस्या से संबंधित सम्पूर्ण साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के निर्माण में महत्वपूर्ण कारक है।''

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

मानव अपने अतीत के संचित व आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। इस कार्य में काफी परिश्रम करना पड़ता है, लेकिन अपने कार्य को वैज्ञानिकता, गहनता एवं स्पष्टता प्रदान करने के लिये वह अपने क्षेत्र से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन कर उससे प्राप्त होने वाले लाभदायक घटकों को अपने कार्य में प्रयुक्त करता है। इसका महत्व बताते हुए **वॉल्टर बर्ग** (1963) ने कहा है कि–

''शैक्षिक अनुसंधान से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी अनुसंधानकर्ता के लिये किसी समस्या विशेष के मूल में पहुँचने का महत्वपूर्ण साधन है।''

गुड, बार व कार्टर (1957) के अनुसार सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से निम्न लाभ है–

- यह ज्ञात करने के लिये पहले से प्राप्त जानकारी का उपयोग समस्या में बिना आगे शोध किये उपयुक्त प्रकार से किया जा सकता है या नहीं?
- उसी शोध पर पुनः कार्य न करने हेतु।
- प्रस्तुत समस्या पर सिद्धान्त, परिकल्पना आदि निर्धारित करने में सहायता हेतु।

जे. डब्ल्यू. बेस्ट (1961, पृ. 32) ने कहा है कि ''यद्यपि सम्बन्धित साहित्य की खोज व अध्ययन करने में काफी समय लग जाता है फिर भी इसके अपने फलदायक परिणाम है।''

अनुसंधान की प्रक्रिया में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का एक वैज्ञानिक और महत्वपूर्ण चरण है। क्योंकि मनुष्य अपने अतीत में संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से तात्पर्य पुस्तकालयों एवं साधनों से प्राप्त अध्ययन सामग्री को समस्या समाधान के लिए पढ़ना, निरीक्षण एवं मूल्यांकन करना।

ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में किसी भी उपयुक्त अध्ययन के लिए शोधकर्ता को पुस्तकालय तथा अनेक साधनों का पर्याप्त उपयोग करना आवश्यक है, तदुपरान्त ही विशिष्ट ज्ञान के लिए प्रभावपूर्ण शोध प्रारम्भ हो सकता है। वास्तव में समस्त मानवीय ज्ञान पुस्तकालयों एवं पुस्तकों में उपलब्ध हो सकता है। मनुष्य के ज्ञान में अटूट क्रतिकता एवं प्रगतिशीलता होती है और अन्य जीव–जन्तुओं के ज्ञान में अप्रगतिशीलता एवं पुनरावृत्ति। प्रत्येक शोधकर्ता को यह भली प्रकार ज्ञात होना चाहिए कि उसके अन्वेषण के क्षेत्र में कौन–कौन से स्त्रोत उपलब्ध है? उनमें से किसका उपयोग करना उसके लिए आवश्यक है तथा उन्हें कहाँ और कैसे प्राप्त कर सकते है?

संबंधित साहित्य की आवश्यकता

1. **अन्तर्दृष्टि का विकास** :– संबंधित साहित्य के अध्ययन से अनुसंधानकर्ता का मार्ग प्रशस्त हो जाता है उन्हें एक नवीन अन्तर्दृष्टि एवं सूझ प्राप्त होती है जिसके द्वारा वह अपनी समस्या की गहनता एवं उसके मूल को समझ लेता है। वह अपने कार्य को अधिक चतुराई एवं कुशलता के साथ करने में अग्रसर होता है।

2. **पुनरावृत्ति से रक्षा** :– जो कार्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छी प्रकार किया जा चुका है यदि वही कार्य पुनः किया जाये तो अनुसंधानकर्ता नवीन ज्ञान का सृजन एवं नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन नहीं कर सकेगा। साथ ही उसका मूल्यवान समय, शक्ति एवं धन का अपव्यय होगा, आवृत्ति मात्र होने के कारण उसके लक्ष्य का प्रभाव शून्य हो जायेगा।

3. **अनुसंधान विधि रचना में सहायता** :– संबंधित साहित्य के अध्ययन से अनुसंधान प्रक्रिया का सम्प्रत्यय विस्तृत एवं स्पष्ट हो जाता है।

4. **ज्ञान में विस्तार** :– संबंधित साहित्य से अनुसंधानकर्ता के ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायता मिलती है। वाल्टर क शब्दों में – ''वास्तव में समस्त मानवीय ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में उपलब्ध हो सकता है अन्य अधिकारियों से भिन्न जो प्रत्येक पीढ़ी के साथ पुनः नये सिरे से कार्य प्रारम्भ करते है, मनुष्य अतीत से संचित एवं लिखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का निर्माण करता ह।''

5. **अन्य समस्या का अन्वेषण** :– कई बार संबंधित साहित्य के अध्ययन से कई ऐसी छोटी समस्याएँ मिल जाती है जिसका अध्ययन मुख्य समस्या के साथ–साथ सम्पन्न हो सकता है इससे किये जाने वाला अनुसंधान कार्य अधिक प्रभावी हो जाता है।

न्यादर्श

न्यादर्श किसी भी अनुसंधान कार्य की आधारशिला है। यह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी, अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय व सार्थक होंगे। न्यादर्श तभी उपयुक्त माना जा सकता है जब वह सम्पूर्ण जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व करें।

विधि निर्धारण एवं उपकरण तैयार करने के पश्चात् अग्रिम महत्वपर्ण कार्य शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन करना है। न्यादर्श चयन के पश्चात् समंकों का संकलन आवश्यक कार्य है जो अनुसंधान में काम लिये गये उपकरण है उनका बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

गुप्ता, एस.सी. ने दत्तों के संकलन की प्रक्रिया को बताते हुए कहा है कि :–

''आंकडों का संकलन एक महत्वपूर्ण सबूत कार्य है जो शोधकर्ता के अनुसंधान कार्य का भली प्रकार से विश्लेषण एवं समस्त क्रिया–कलापों के परिणाम जानने हेतु अनुसंधान योजना के अंतर्गत मुख्य प्रक्रिया है।''

न्यादर्श का अर्थ

वस्तुतः न्यादर्श वह प्रक्रिया है जिसके प्रतिनिधित्व माप चुना जाता है। इस प्रतिनिधि माप द्वारा शोध अध्ययन में समय, शक्ति व धन का अनपेक्षित अपव्यय का बचना सम्भव हो पाता है।

न्यादर्श चयन द्वारा सीमित समय एवं सीमित साधनों से विश्वसनीय परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।

बोर्ग (1965) के अनुसार– ''सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना आवश्यक नहीं है। क्योंकि इसमें समय, धन व अन्य साधनों का अपव्यय होता है। अतः इस जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता हुआ एक समूह का चयन कर लिया जाता है।'' उस समूह को न्यादर्श कहा जाता है।''

न्यादर्श चयन की आवश्यकता

जेहोदा एवं इटल (1959) ने कहा है :– ''यदि काई अपने अध्ययन के निष्कर्ष में काफी हद तक सत्यता चाहता है तो उसे अपने अध्ययन छोटे न्यादर्श पर केन्द्रित करना चाहिए। बड़े न्यादर्श पर गहन अध्ययन बड़ा मुश्किल है तथा इससे अधिक धन एवं समय खर्च होता है। इसलिये इसलिये शोधकर्ता को अध्ययन के लिये सदैव जनसंख्या में से न्यादर्श का चयन करना चाहिए।''

शोध समस्या के उद्देश्य

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्राइवेट ट्यूशन करने के कारणों का अध्ययन'' लघुशोध में निम्नलिखित उद्देश्य शामिल किए गए।

1. ट्यूशन करने के प्रति विद्यार्थियों के कारणों का पता लगाना।
2. राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों का पता लगाना।
3. निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों का पता लगाना।
4. विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों का पता लगाना।
5. वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणा का पता लगाना।
6. राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों का अध्ययन करना।
7. विज्ञान और वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों का अध्ययन करना।

शोध समस्या की परिकल्पनाएँ

अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजकीय विद्यालय के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. निजी विद्यालय के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. ''विद्यालय में गुणात्मक अध्ययन न होना'' क्षेत्र के लिए राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. ''पाठ्यक्रम की जटिलताएँ'' क्षेत्र के लिए राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. ''स्पर्धात्मक वातावरण'' क्षेत्र के लिए राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. ''विद्यालय में गुणात्मक अध्ययन न होना'' क्षेत्र के लिए राजकीय विद्यालय के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. ''पाठ्यक्रम की जटिलताएँ'' क्षेत्र के लिए राजकीय विद्यालय के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. ''स्पर्धात्मक वातावरण'' क्षेत्र के लिए राजकीय विद्यालय के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
12. ''विद्यालय में गुणात्मक अध्ययन न होना'' क्षेत्र के लिए निजी विद्यालय के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
13. ''पाठ्यक्रम की जटिलताएँ'' क्षेत्र के लिए निजी विद्यालय के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
14. ''स्पर्धात्मक वातावरण'' क्षेत्र के लिए निजी विद्यालय के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के ट्यूशन करने के कारणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध समस्या का परिसीमन

किसी वृहद क्षेत्र के अध्ययन को सरल एव प्रभावी बनाने हेतु एवं उसे छोटा रूप प्रदान करने हेतु समस्या के क्षेत्र का परिसीमन करना परमावश्यक

हो जाता है। यदि समस्या सीमित व स्पष्ट होगी तो उसका अध्ययन गहनता से किया जा सकता हैं, जिससे शोध की उपादेयता के साथ वैधता, विश्वसनीयता भी बढ़ती है। अतः अनुसंधानकर्ता ने भी अध्ययन की प्रकृति एवं समय सीमा को ध्यान में रखते हुए सवाईमाधोपुर शहर के कुल दो विद्यालय चुने। सरकारी तथा निजी विद्यालय निम्न प्रकार है 1. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, 2. सरस्वती सैकेण्डरी स्कूल,

अनुसंधानकर्ता ने कुछ मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान में ग्रामीण शहरी और छात्र–छात्रा के समूहों के अनुसार न्यादर्श का विभाजन नहीं किया।

शोध उपकरण

सर्वेक्षण विधि का मुख्य आधार शेष उपकरण होता है। प्रत्येक शोध कार्य की महत्ता उपकरण पर निर्भर करती है, क्योंकि उपकरण की उपयुक्तता वैधता एवं विश्वसनीयता पर ही दत्तों की विश्वसनीयता व वैधता निर्भर करती है।

प्रत्येक अनुसंधान कार्य हेतु दत्तों का संकलन करने के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है उन साधनों को उपकरण कहा जाता है। विभिन्न उद्देश्यों के लिये भिन्न–भिन्न प्रकार की सूचनाएं संकलित करने के लिये अलग–अलग प्रकार के उपकरण प्रयोग में लिए जाते है।

जे. डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार :– ''उपकरणों को बढ़ाई के औजारों की भांति विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विशिष्ट परिस्थितियों में प्रयुक्त होना बताया है।''

उपकरण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए **श्रीमती एस.पी. सुखिया** ने लिखा है – ''किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन या अज्ञात दत्त संकलित करने के लिये अनेक विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिये नवीन दत्त संकलित करते हुए नवीन क्षेत्र का उपयोग करने हेतु कतिपय यन्त्रों या उपकरणों की आवश्यकता होती है। उन्हीं यन्त्रों को उपकरण कहते है।''

आवश्यक दत्तों के संकलन हेतु सुव्यवस्थित कार्य विधि को अपनाना एवं खोज निकालना आवश्यक होता है। अतः परिणाम व गुणों की दृष्टि से पर्याप्त या उचित दत्तों का संकलन किया जाना चाहिए। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिये नवीन दत्त संकलन हेतु ही कतिपय उपकरणों की आवश्यकता होती है।

विधियाँ प्रविधियाँ एवं उपकरण

अनुसंधान रूपी भवन की महत्वपूर्ण ईटे है जिसके बिना शोधकर्ता अनुसंधान रूपी भवन का निर्माण नहीं कर सकता है। यदि अनुसंधान कार्य को उपयोगी एवं सफल बनाने है तो उचित उपकरणों एवं प्रविधि का चयन किया जाना चाहिये जो अधिक वैज्ञानिक एवं प्रमाणिक हो।

इस प्रकार विधियाँ एवं उपकरण वह मार्ग है जिस पर चलकर शोधकर्ता अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक शोध कार्य में विधि के साथ दत्तों के संकलन के लिए प्रविधि एवं उपकरणों का चयन अनिवार्य है। उपकरणों का चयन एवं निर्माण दोनों ही महत्वपूर्ण है। अतः उपकरणों का चयन एवं निर्माण शोधकार्य के लिये उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उपयुक्त विधि का चयन। इस दृष्टि से अध्ययन विधि प्रविधि व उपकरण की शोधकार्य में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता अपने शोध कार्य में प्रयुक्त सभी विधि, प्रविधि व उपकरणों का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा है।

शोध में प्रयुक्त विधि

शैक्षिक अनुसंधान की अनेक वैज्ञानिक विधियां है कोई भी विधि किसी अन्य विधि से श्रेष्ठ नहीं कही जा सकती क्योंकि प्रत्येक विधि की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक व्यापक रूप से प्रयुक्त की जाने वाली विधियों में से एक है। इसका कार्य क्षेत्र दत्त के संग्रहीकरण एवं सारणीबद्ध करने के अतिरिक्त व्याख्या, तुलना, मापन, वर्गीकरण, मूल्यांकन व सामान्यीकरण भी है। यह वर्तमान शैक्षिक समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत करती है तथा इन्हें हल करने की विधियों की ओर संकेत करती है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि प्रस्तुत की गई है।

सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण विधि उस प्रदत्त को एकत्र करने एवं विश्लेषण करने की विधि है जो बहुत से ऐसे उत्तर देने वालों द्वारा संकलित किया जाता है जो कि एक सुनिश्चित जन समुदाय के प्रतिनिधि का कार्य करती है। सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध परिस्थितियों, सम्बन्धों, प्रचलित व्यवहार, विश्वास दृष्टिकोण एवं अभिवत्तियों से है जो कि स्थापित हो चुके है।

शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि व्यापक रूप में प्रयोग की जाने वाली विधियों में से एक है। इसका प्रयोग स्थानीय एवं राज्य स्तर, एवं राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय पक्षों के अध्ययन करने के लिये किया जा रहा है।

इस विधि का कार्य क्षेत्र संग्रहीकरण एवं सारणीबद्ध करने के लिये, अतिरिक्त व्याख्या तुलना, मापन, वर्गीकरण, मूल्यांकन तथा सामान्यीकरण भी है। इसके द्वारा शोधकर्ता स्वयं अपने कार्य क्षेत्र में जाकर शोध कार्य के लिये आवश्यक सूचनाएं प्राप्त कर सकता है।

गुड एवं स्केट्स के अनुसार :– ''यह अत्यन्त प्राचीन पद्धति है इसका प्रयोग हेरोडोटस ने 3050 बी.सी. मिश्र की जनता की सम्पति को जानने के लिये किया था।''

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार :– इस विधि का प्रयोग साधारणतः ऐसे शोधकार्यो के लिये किया जाता है, जिसका उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि वर्तमान काल में सामान्य या प्रतिनिधि स्थिति का व्यवहार क्या है? इनका सम्बन्ध वर्तमान में उपस्थित संस्थितियाँ, संबंधित प्रचलित व्यवहारों, विश्वासों, दृष्टिकोणों या अभिवृत्तियों का जो कि स्थापित हो चुकी है विकसित हो रही है इन सबसे है।

शोध समस्या की सीमाएँ

1. विद्यार्थियों के अभिभावकों से सम्पर्क नहीं कर पाया।
2. विद्यार्थियों के अध्यापकों से सम्पर्क नहीं कर पाए।
3. विद्यालय के प्रधानाध्यापक से सम्पर्क नहीं कर पाए।
4. छात्र–छात्राओं का अलग अध्ययन नहीं कर पाए।
5. शहरी–ग्रामीण विस्तार का अलग अध्ययन नहीं कर पाए।
6. दो से ज्यादा विद्यालयों का अध्ययन नहीं कर पाए।
7. अध्ययन हेतु कक्षा 1–12 के विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया।
8. स्वनिर्मित परीक्षण की तार्किक वैधता ज्ञान नहीं की गयी है।

सुझाव

शोधकार्य के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों को देखते हुए शोधकर्ता ने निम्न सुझाव दिये हैं।

1. **विद्यार्थियों के लिए** – ट्यूशन की ओर आकर्षित होने वाले विद्यार्थी ट्यूशन के लिए अनदेखा अनुकरण न करें और इसके पक्ष–विपक्ष को समझें। और विद्यालय में होने वाली विभिन्न प्रवृत्तियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखे।

2. **अभिभावकों के लिए** – अभिभावक अपने कमजोर एवं प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं के निर्देशन में ट्यूशन की प्रवृति पर विचार करे। अभिभावक अन्य अभिभावक का अनदेखा अनुकरण न करे।

3. **अध्यापकों के लिए** – ट्यूशन शब्द से सम्पूर्ण शिक्षक समाज को सदैव नीचा देखा जाता रहा है इसलिए अध्यापक को अपना शालीय अध्यापन अत्यन्त प्रभावशालो एवं रोचक बनाना चाहिए। और ट्यूशन कार्य का शालीय अध्यापन कार्य के साथ बिल्कुल ही संबंध नहीं रखना चाहिए।

4. **सामान्य जनता के लिए** – सामान्य लोग जिनके बालक ट्यूशन नहीं करते है किन्तु इस विषय के बारे अधिक जानने के लिए उत्सुक है वह भी अपने बच्चों के निर्देश म ट्यूशन की आवश्यकता पर विचार कर सकेंगे।

5. **विद्यालय प्रशासकों के लिए** – ट्यूशन करने वाले एवं न करने वाले अध्यापकों के कार्यो का निरन्तर अवलोकन करते रहना चाहिए। विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को कठिन लगने वाली, विषयों की अतिरिक्त कक्षाएँ लगवानी चाहिए। जिसके लिए उस अध्यापक को कुछ अतिरिक्त आर्थिक लाभ भी दिया जाना चाहिए, जिससे वह उसे भार न समझ कर अपने कर्त्तव्य का ही एक भाग मान सके। प्रधानाध्यापक को चाहिए कि वे विद्यालय के सभी क्रियाकलापों का सतत् मूल्यांकन करते रहें, जिसमें विशेषतः छात्रों के प्रायोगिक कार्य, कक्षा कार्य एवं गृहकार्य को सम्मिलित किया जाय। खासकर निजी विद्यालयों में कक्षा में बढ़ती विद्यार्थियों की संख्या पर नियन्त्रण रखा जाये एवं शिक्षक विद्यार्थी अनुपात 1:40 रखा जाये जिससे उन पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जा सकें जो ट्यूशन का मूल कारण है।

समाहार

प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकता है कि ऐसा भी नहीं है कि ट्यूशन उपादेय नहीं है। आवश्यकता और उत्कृष्टता के लिये विशेषीकरण के लिये प्रतियोगिता परीक्षाओं की विशेष तैयारी की दृष्टि से कमजोर विद्यार्थी को उत्तीर्ण होने के लिये मध्यम को उत्कृष्ट और उत्कृष्ट को और उत्कृष्ट शिखरस्थ बनाने के लिए किसी सीमा तक उपादेय है किन्तु दूसरी ओर बाधित और अनिवार्य की स्थिति में समाज में यह एक शैक्षिक आतंकवाद है।

अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया यह प्रारम्भिक प्रयास छोटे न्यादर्श पर है। अतः भविष्यवाणी नहीं की जा सकती किन्तु इतना अवश्य है कि भविष्य में शोध कार्य हेतु यह एक प्रारम्भिक प्रयास है। आशा है प्रस्तुत अनुसंधान के वाचन का लाभ ज्यादा से ज्यादा छात्राध्यापक और शिक्षक– प्रशिक्षक करेंगे तो शोधकर्ता अपने श्रम को सार्थक समझेगा।

REFERENCES

1. अग्रवाल, जे.सी.: ''एज्युकेशनल रिसच एन इन्ट्रोडक्शन'' आर्य बुक डिपो., न्यू दिल्ली (1998)

2. एनास्टसी, ए.: ''साइकोलोजिकल टेस्टीन्ग'' मेकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क (1976)

3. बेस्ट,जे. डब्ल्यू.: ''रिसर्च इन एज्युकेशन'' प्रेनटाइस होल ऑफ इन्डिया प्राइवेट लिमिटेड, न्यू दिल्ली (1987)

4. बेस्ट,जे. डब्ल्यू.: ''रिसर्च इन एज्युकेशन'' प्रेनटाइस होल इन्क इगल वुड कम्पनी, यू.एस.ए. (1999)

5. बर्ग,डब्ल्यु. जी.: ''एज्युकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोडक्शन'' लोगमेनस ग्रीन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, न्यूयार्क (1983)

6. बुच, एम.बी.: ''ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन'' सेन्टर ऑफ एडवान्सड स्टडी इन एज्युकेशन, फेकल्टी ऑफ एज्युकेशन एण्ड साइकोलोजी, एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा, इन्डिया (1994)

7. चेपलिन, जे.पी.: ''डिक्सनरी ऑफ साइकोलोजी'' (1978)

8. ढौढियाल एवं फाटकः ''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर (1992)

9. फोकस, डी.जे.: ''घी रिसर्च प्रोसेस इन एज्युकेशन'', होल्ट राइनहार्ट एण्ड विन्सटन, न्यूयार्क (1999)

10. गरेटे, एच. इ.: ''स्टेटीसटीकस इन सायकोलोजी एण्ड एज्युकेशन'' लोगमेनस ग्रीन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, न्यूयार्क (2000)

11. गुड, सी.वी.: ''डिक्सनरी ऑफ एज्युकेशन'' मेकग्रो हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, यू.एस.ए.

12. गरेटे, एच. इ.: ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी – हिन्दी अनुवाद'', कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना